दूःख तो एक दूसरे की मदद करने का अवसर

एक माँ थी जिसकी बेटी जन्मना गंभीर विकलांग थी। उसने अपने दिल के अंतरतम को बताया।

जब से माँ अपनी बेटी की गंभीर विकलांगता को जानने पर रोये जा रही थी, तब से आज तक पति-पत्नी और परिवार के एक-दूसरे का समर्थन करके आया। उसने चला गया मार्गक्रम पुनरावलोकन करके हास्य के साथ बताया।

“बेटी हमारा परिवार का सूरज है।”

उसने भावी जीवन की चिंता से ग्रस्त रहते हुए तो भी उसकी बेटी की विकलांगता का सामना किया और बहुत से लोगों की मदद मिलते हुए तकलीफ को पार कर आया। उसमें बड़ा सहिष्नुता है।

एक माँ थी जिसकी बेटी जन्मना गंभीर विकलांग थी। उसने अपने दिल के अंतरतम को बताया।

जब से माँ अपनी बेटी की गंभीर विकलांगता को जानने पर रोये जा रही थी, तब से आज तक पति-पत्नी और परिवार के एक-दूसरे का समर्थन करके आया। उसने चला गया मार्गक्रम पुनरावलोकन करके हास्य के साथ बताया।

“बेटी हमारा परिवार का सूरज है।”

उसने भावी जीवन की चिंता से ग्रस्त रहते हुए तो भी उसकी बेटी की विकलांगता का सामना किया और बहुत से लोगों की मदद मिलते हुए तकलीफ को पार कर आया। उसमें बड़ा सहिष्नुता है।

तेन्नीक्यो में “दिखाई देने वाले भी कर्मसंबंद हैं और सुनाई देने वाले भी कर्मसंबंद है” ऐसा सिखाया गया है।

यह तो एक सोच का तरीका है कि आसपास में घटित विषय दूसरों की बात नहीं बल्कि अधिक या कम अपने आप से संबंधित है।

हमारे लिए अचानक पड़े हुए दुःख तो सिल्फ दुःखपूर्ण स्तिथि नहीं है।इसी अवसर पर एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। ऐसा आचरण आनंदमय जीवन पर पहुँचने के लिए एक सुराग़ बनेगा।

तेन्नीक्यो में “दिखाई देने वाले भी कर्मसंबंद हैं और सुनाई देने वाले भी कर्मसंबंद है” ऐसा सिखाया गया है।

यह तो एक सोच का तरीका है कि आसपास में घटित विषय दूसरों की बात नहीं बल्कि अधिक या कम अपने आप से संबंधित है।

हमारे लिए अचानक पड़े हुए दुःख तो सिल्फ दुःखपूर्ण स्तिथि नहीं है।इसी अवसर पर एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। ऐसा आचरण आनंदमय जीवन पर पहुँचने के लिए एक सुराग़ बनेगा।